अध्याय 1: आत्मपरिचय / एक गीत

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 8 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1	कविता के साथ	6 प्रश्न
प्रश्नावली 1.2	कविता के आसपास	1 प्रश्न
प्रश्नावली 1.3	आपसदारी	1 प्रश्न

प्रश्नावली 1.1 — कविता के साथ

प्रश्न 1

कविता एक ओर जग-जीवन का भार लिए घूमने की बात करती है और दूसरी ओर 'मैं कभी न जग का ध्यान किया करता हूँ' — विपरीत से लगते इन कथनों का क्या आशय है?

हल

इन दोनों कथनों में विरोध केवल ऊपरी है, वास्तविक नहीं।

'जग-जीवन का भार लिए घूमना' का अर्थ है कि कवि संसार के दुख-दर्द, सुख-पीड़ा से अपरिचित नहीं है — वह जीवन की वास्तविकता को जानता और उसे अपने भीतर धारण किए चलता है।

परंतु 'जग का ध्यान न करना' का अर्थ यह है कि वह संसार के दिखावे, प्रतिष्ठा, लोकरंजन और सांसारिक चाहतों की परवाह नहीं करता।

कवि संसार में रहता है, उसके भार को महसूस करता है, किंतु संसार की मान्यताओं और प्रत्याशाओं के अनुसार नहीं चलता।

वह अपने मन की गान गाता है, अपने भीतर के उद्गार और स्वप्नों का संसार लिए चलता है — यही उसका जग से द्वंद्वात्मक संबंध है।

दूसरे शब्दों में, कवि दुनिया में है किंतु दुनिया का तलबगार नहीं है।

उत्तर: कवि संसार के दुख-दर्द को महसूस करता है (जग-जीवन का भार), किंतु संसार के दिखावे, प्रतिष्ठा और लोकरंजन की परवाह नहीं करता (जग का ध्यान नहीं)। दोनों कथन मिलकर कवि के 'दुनिया में हूँ, दुनिया का तलबगार नहीं' वाले द्वंद्वात्मक स्वभाव को व्यक्त करते हैं।

प्रश्न 2

जहाँ पर दाना रहते हैं, वहीं नादान भी होते हैं — कवि ने ऐसा क्यों कहा होगा?

हल

कवि की यह पंक्ति 'नादान वहीं है, हाय, जहाँ पर दाना!' एक गहरी विडंबना को व्यक्त करती है।

कवि का आशय है कि जहाँ ज्ञानी (दाना) लोग होते हैं, वहीं अज्ञानी (नादान) भी उनके बीच होते हैं।

ज्ञानी लोग सत्य की खोज में लगे रहते हैं, अनेक यत्न करते हैं, परंतु सत्य किसी ने भी पूरी तरह नहीं जाना।

इसलिए ज्ञानी होते हुए भी वे एक अर्थ में नादान हैं — क्योंकि जीवन का परम सत्य उनकी पकड़ में भी नहीं आया।

साथ ही, जो वास्तव में ज्ञानी है वह यह स्वीकार करता है कि वह कुछ नहीं जानता — यही उसकी सच्ची बुद्धिमत्ता

है।

कवि स्वयं कहता है — 'मैं सीख रहा हूँ, सीखा ज्ञान भुलाना!' — अर्थात् ज्ञान का असली पाठ यह है कि जानी हुई बातों की सीमाओं को पहचाना जाए।

उत्तर: कवि का आशय है कि ज्ञानी और अज्ञानी साथ-साथ रहते हैं। सत्य की खोज में लगे ज्ञानी भी अंत तक सत्य को पूरी तरह नहीं जान पाते, इसलिए एक अर्थ में वे भी नादान हैं। सच्चा ज्ञान सीखी हुई बातों की सीमाओं को पहचानने में है।

प्रश्न 3

'मैं और, और जग और' — पंक्ति में 'और' शब्द की विशेषता बताइए।

हल

इस पंक्ति में 'और' शब्द तीन बार आया है और तीनों बार इसका अर्थ अलग-अलग है — यही इस शब्द की काव्यात्मक विशेषता है।

पहला 'और' (मैं और) — यहाँ 'और' का अर्थ है 'अलग' या 'भिन्न'। कवि कहता है कि वह एक अलग किस्म का व्यक्ति है।

दूसरा 'और' (और जग) — यहाँ 'और' का अर्थ है 'बाकी' या 'अन्य'। शेष संसार (बाकी लोग) भी उससे अलग हैं।

तीसरा 'और' (जग और, कहाँ का नाता) — यहाँ 'और' का अर्थ है 'फिर भी' या 'तब भी', जो प्रश्न उठाता है कि ऐसे में मेरा और जग का क्या नाता?

इस प्रकार एक ही शब्द 'और' तीन अलग-अलग अर्थों में प्रयुक्त होकर कवि और संसार के बीच की भिन्नता और उनके जटिल संबंध को एक साथ व्यक्त करता है।

यह शब्द की शक्ति (काकु) और यमक-सदृश काव्यगुण का उदाहरण है।

उत्तर: 'और' शब्द तीन बार तीन भिन्न अर्थों में आया है — (1) 'अलग/भिन्न' (मैं और = मैं अलग किस्म का हूँ), (2) 'बाकी/अन्य' (और जग = शेष संसार), (3) 'तब भी/फिर भी' (जग और, कहाँ का नाता — फिर इनसे क्या रिश्ता?)। यह एक ही शब्द की बहु-अर्थी प्रयोग की विशेषता है।

प्रश्न 4

'शीतल वाणी में आग' के होने का क्या अभिप्राय है?

हल

यह पंक्ति विरोधाभास (ऑक्सीमोरन) का सुंदर उदाहरण है।

'शीतल वाणी' से तात्पर्य है — कवि की आवाज़ और काव्य बाह्य रूप से शांत, मधुर और सौम्य है।

किंतु उस वाणी में 'आग' का अर्थ है कि उसके भीतर तीव्र भावना, वेदना, संवेदना और हृदय की जलन छिपी है।

जो दुख और पीड़ा कवि ने भोगी है, वह बाहर से शांत दिखने वाले शब्दों में ज्वाला की तरह धधकती है।

यह विरोधाभास कवि के उस स्वभाव को दर्शाता है जो बाहर से स्थिर और मस्त दिखते हुए भी भीतर से गहरी पीड़ा और तीव्र भाव लिए चलता है।

कविता में इसी तरह कवि 'रोदन में राग' और 'उन्मादों में अवसाद' लिए चलने की बात करता है — विपरीतों का यह सामंजस्य ही उसके व्यक्तित्व की पहचान है।

उत्तर: 'शीतल वाणी में आग' विरोधाभास अलंकार है। इसका अभिप्राय यह है कि कवि की वाणी बाहर से मधुर और सौम्य है, किंतु उसके भीतर तीव्र वेदना और जलन की आग छिपी है। शांत काव्य में भी गहरी भावनात्मक तीव्रता निहित है।

प्रश्न 5

बच्चे किस बात की आशा में नीड़ों से झाँक रहे होंगे?

हल

यह प्रश्न 'एक गीत' कविता से संबंधित है।

शाम होने पर घोंसलों (नीड़ों) में रह रहे चिड़ियों के बच्चे अपनी माँ (अभिभावक चिड़िया) की प्रतीक्षा में घोंसले से बाहर झाँक रहे होंगे।

दिन भर दाना चुगने गई माँ चिड़िया जब शाम को लौटती है, तभी बच्चों को भोजन मिलता है।

बच्चे इसी आशा में — माँ के आने की, भोजन मिलने की और उनकी ममतामयी उपस्थिति की प्रत्याशा में — घोंसले से झाँक रहे हैं।

इस दृश्य से कवि ने यह भी संकेत दिया है कि किसी प्रिय के मिलन की आशा ही प्राणी को सक्रिय और चंचल बनाती है।

यह ध्यान चिड़ियों के परों में भी चंचलता भर देता है — वे जल्दी-जल्दी अपने घोंसलों की ओर उड़ती हैं।

उत्तर: बच्चे अपनी माँ (चिड़िया) के लौटने की आशा में नीड़ों से झाँक रहे हैं। दिन भर दाना चुगने गई माँ के आने और उनके भोजन मिलने की प्रत्याशा उन्हें चंचल बनाए रखती है।

प्रश्न 6

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' — की आवृत्ति से कविता की किस विशेषता का पता चलता है?

हल

इस पंक्ति की बार-बार आवृत्ति (refrain) से कविता में 'टेक' (धुन) की विशेषता का पता चलता है।

यह एक गेय गीत (lyric) है और इस टेक की पुनरावृत्ति गीत को एक संगीतात्मक लय और ताल देती है।

आवृत्ति का काव्यगुण 'अनुप्रास' और 'पुनरुक्ति प्रकाश' से संबंधित है — यह ध्वनि और अर्थ दोनों स्तरों पर प्रभाव उत्पन्न करती है।

साथ ही, इस टेक की पुनरावृत्ति यह बताती है कि 'समय बीत रहा है' — यह संदेश बार-बार मन पर अंकित होता जाता है।

दिन के जल्दी ढलने का अर्थ है जीवन की क्षणभंगुरता। आवृत्ति से यह भाव और तीव्र हो जाता है।

इस प्रकार यह पंक्ति गीत की लय, संगीतात्मकता, और जीवन की क्षणभंगुरता के गहरे संदेश को एक साथ उभारती है।

उत्तर: 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' की आवृत्ति से कविता की गेयता (संगीतात्मकता) और 'टेक' (refrain) विशेषता का पता चलता है। यह पुनरावृत्ति गीत को लय और ताल देती है तथा समय की क्षणभंगुरता के संदेश को बार-बार मन में गहरा करती है।

प्रश्नावली 1.2 — कविता के आसपास

प्रश्न 1

संसार में कष्टों को सहते हुए भी खुशी और मस्ती का माहौल कैसे पैदा किया जा सकता है?

हल

बच्चन की 'आत्मपरिचय' कविता इस प्रश्न का उत्तर स्वयं देती है।
कवि के अनुसार जीवन में कष्ट अनिवार्य हैं — 'मैं जग-जीवन का भार लिए फिरता हूँ' — किंतु उनके बावजूद खुशी और मस्ती संभव है।
सबसे पहले, कष्टों को सहज भाव से स्वीकार करना जरूरी है — 'सुख-दुख दोनों में मग्न रहा करता हूँ।'
दूसरा, जीवन को प्रेम (स्नेह-सुरा) से भरपूर जीना — 'मैं स्नेह-सुरा का पान किया करता हूँ।'
तीसरा, संसार की मान-प्रतिष्ठा और लोकरंजन की परवाह न करके अपने मन की आवाज़ पर चलना।
चौथा, आंतरिक उल्लास और मस्ती को जीवंत रखना — 'मस्ती का संदेश लिए फिरता हूँ।'
पाँचवाँ, प्रकृति और जीवन के बदलते रंगों में अर्थ खोजना और किसी लक्ष्य की प्रत्याशा में जीना।
संक्षेप में, जीवन के कष्टों को न नकारते हुए, उन्हें अपनाते हुए भी आंतरिक प्रेम, स्वप्न और उल्लास बनाए रखना ही मस्ती का स्रोत है।

उत्तर: कष्टों को सहज स्वीकार कर, सुख-दुख दोनों में मग्न रहकर, प्रेम और स्वप्नों को जीवंत रखकर, तथा लोकरंजन की परवाह छोड़ अपने मन की आवाज़ पर चलकर खुशी और मस्ती का माहौल पैदा किया जा सकता है — यही बच्चन का हालावादी जीवन-दर्शन है।

प्रश्नावली 1.3 — आपसदारी

प्रश्न 1

जयशंकर प्रसाद की 'आत्मकथ्य' कविता की कुछ पंक्तियाँ दी जा रही हैं। क्या पाठ में दी गई 'आत्मपरिचय' कविता से इस कविता का आपको कोई संबंध दिखाई देता है? चर्चा करें। आत्मकथ्य (जयशंकर प्रसाद): मधुप गुन-गुना कर कह जाता कौन कहानी यह अपनी, उसकी स्मृति पाथेय बनी है थके पथिक की पंथा की। सीवन को उधेड़ कर देखोगे क्यों मेरी कंथा की? छोटे से जीवन की कैसे बड़ी कथाएँ आज कहूँ? क्या यह अच्छा नहीं कि औरों की सुनता मैं मौन रहूँ? सुनकर क्या तुम भला करोगे मेरी भोली आत्म-कथा? अभी समय भी नहीं, थकी सोई है मेरी मौन व्यथा।

हल

दोनों कविताएँ 'आत्मपरिचय' (बच्चन) और 'आत्मकथ्य' (प्रसाद) एक ही विषय — कवि का अपना परिचय देने का प्रयास — से संबंधित हैं, किंतु दोनों का दृष्टिकोण भिन्न है।

समानताएँ:

दोनों कवि अपने जीवन की पीड़ा, एकांत और संसार से अपने जटिल संबंध को व्यक्त करते हैं।

दोनों में व्यक्तिगत अनुभव और आंतरिक भावना की प्रधानता है — छायावादोत्तर और छायावादी काव्य की यह साझी विशेषता है।

दोनों में जीवन की व्यथा को सीधे न कहकर प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से व्यक्त किया गया है।

अंतर:

बच्चन की 'आत्मपरिचय' में मस्ती, उन्माद और जीवन को जीने का उल्लास है — कवि कहता है 'मैं दुनिया का एक नया दीवाना हूँ।'

प्रसाद की 'आत्मकथ्य' में संकोच, विनम्रता और आत्मकथा कहने से इनकार है — कवि अपनी व्यथा को जगाना नहीं चाहता।

बच्चन का स्वर आत्मविश्वासी और मस्त है; प्रसाद का स्वर विनत और मौन है।

दोनों कविताएँ मिलकर छायावादी और छायावादोत्तर काव्य की दो भिन्न परंपराओं को प्रतिनिधित्व करती हैं।

उत्तर: दोनों कविताओं में कवि का आत्म-परिचय विषय समान है, किंतु दृष्टिकोण भिन्न है। बच्चन उन्माद और मस्ती के साथ खुलकर अपना परिचय देते हैं, जबकि प्रसाद संकोच और मौन व्यथा के साथ आत्मकथा कहने से इनकार करते हैं। दोनों में पीड़ा है — एक मस्ती में व्यक्त होती है, दूसरी मौन में।